सर्प दंश एवं बचाव

आमतौर पर साँप का नाम सुनते ही डर की अनुभूति होती है। लेकिन इसके अलावा यह भी सत्य है कि मनुष्य आदि काल से सर्प के साथ रहता आ रहा है इसलिये साँप के प्रति आस्था भी है तथा गलत धरणायें भी हैं तथा यह सत्य हो रहा है कि साँप मनुष्य को अपने को बचाने की स्थिति में ही काटता है। साँप गर्मी एवं बरसात में ज्यादा हरकत करता है। शहरों की तुलना में गाँवों में साँप काटने की घटनायें ज्यादा होती है। आमतौर पर दो तरह के साँप होते हैं।

- **कोब्रा ग्रुप**–इसका जहर नाड़ी तंत्र के ऊपर असर करता है।
- **वाइपर ग्रुप**–इसका जहर खून के ऊपर असर करता है। आमतौर पर सर्प लोगों को हानि नहीं पहुँचाते। यह किसानों के लिए लाभदायक है क्योंकि यह फसलों को हानि पहुँचाने वाले कीड़े, मकोड़े, टिड्डी, छोटे पक्षियों के अण्डें व चूहों को खा जाते हैं।
- धीरे–धीरे साँस लेने में तकलीफ होती है।
- आक्सीजन की कमी के कारण साँस लेने में दिक्कत होती है और मुँह नीला पड़ जाता है। अन्त में साँस अवरोध के कारण व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

कुछ विषहीन व विषैले सर्पों के नाम निम्न हैं :–

(1) विषहीन एर्प :–

- एनाकोंडा
- बोआ
- गार्टर सर्प
- भूरा वृक्ष सर्प

(2) विषैले सर्प :–

- रैटल सर्प
- कोरल सर्प
- वाटर मोकैसिन
- रसल वाइपर

जहरीला सर्प काटने पर क्या लक्षण होते हैं :–

- काटने के कुछ समय बाद कटे स्थान पर सूजन आ जाती है। कभी–कभी फफोले भी आ जाते हैं।
- नींद व उल्टी आती है।

- रोगी ज्यादा देर तक आँख, मुँह खोल नहीं सकता है।
- काटने के कुछ समय बाद रोगी बैठ नहीं पाता है।
- धीरे–धीरे साँस लेने में तकलीफ होती है।
- आक्सीजन की कमी के कारण साँस लेने में दिक्कत होती है और मुँह नीला पड़ जाता है। अन्त में साँस अवरोध के कारण व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

साँप काटने पर क्या कार्यवाही करें ?

- साँप काटे व्यक्ति को सांत्वना दें तथा साहस बढ़ायें तथा यह कहिये कि साँप काटने से मनुष्य नहीं मरता और ऐसा वातावरण बनाये कि कुछ हुआ ही नहीं।
- तुरन्त काटने वाली जगह को देखिये। यदि पैर में काटा है तो घुटने से ऊपर रबर का फीता या मुलायम रस्सी से बाँधे। रस्सी इस प्रकार बाँधी जाये कि एक पेंसिल आराम से घूम सके तथा 15–20 मिनट में टूर्नीकेट को एक या दो मिनट के लिए ढीला कर दें ताकि रक्त प्रभाव सही तरीके से चलता रहे तथा रोगी को किसी भी तरह से चलनें–फिरनें न दें।
- रोगी को सिगरेट, पानी, शराब, चाय आदि न पिलाया जाय। प्रभावित जगह को साबुन पानी से धोयें। गर्म सेक न दें।
- अगर रोगी उल्टी करता हो तो उसे उल्टा सुला देना चाहिए। ताकि उल्टी के कारण स्वॉश नली में कोई चीज न फँस जाये।
- जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाने की व्यवस्था करें तथा एन्टी वेनम टीके लगायें।

साँप काटने से बचाने के उपाय :–

- जहाँ तक हो सके घर द्वार साफ रखें।
- अँधेरे में हाथ ऐसे जगह न डालें जहाँ काटने की सम्भावना हो।
- जहाँ तक हो सके जमीन पर न साये यदि सोये तो मच्छरदानी का इस्तेमाल जरूर करें।
- मल त्याग करने जंगल झाड़ी इलाकों में न जायें।
- घर में चूहा आदि न हो इसके लिए चूहे मारने की दवा का इस्तेमाल करें क्योंकि साँप घरों में चूहों की जगह से आता है।
- मिट्टी के घर में विल होने पर गैभेक्सीन डालकर विल को बन्द करें।
- शयन कक्ष के समीप मुर्गे का दर्बा/घोंसला न बनायें और अँधेरे में मुर्गी के दर्वे एवं घोसले में हाथ न डालें।
- घर के चारों तरफ स्नेक बाइट ट्रेंच खोद कर फिनायल, ब्लीचिंग व गैमेक्सीन का छिड़काव करें।

- जूता आदि पहनते समय झाड़ कर पहनें।

सर्पदंश के बाद क्या करें, क्या न करें ?

क्या करें ?

- साँप द्वारा पुनः काटे जाने के जोखिम को दूर करने हेतु पीड़ित व्यक्ति को नजदीकी सुरक्षित जगह ले जायें।
- संभव हो तो साँप की प्रजाति विषयक जानकारी एकत्र करें।
- पीड़ित व्यक्ति को ढ़ाँढ़स बँढ़ायें।
- पीड़ित के कपड़े व अगूंठी, घड़ी निकाल दें।
- घाव को साबुन पानी से धोयें।
- सम्पूर्ण प्रभावित भाग पर जीवाणु रोधक मरहम लगायें।
- साँप द्वारा काटे गये शरीर के उस भाग को ऊँचा उठा कर रखें।
- पीड़ित व्यक्ति को शारीरिक क्रिया न करने दें।
- पीड़ित व्यक्ति को पीने के लिये कोई तरल पदार्थ न दें।
- पीड़ित व्यक्ति को सोने न दें।
- पीड़ित व्यक्ति को गर्म रखें।
- पीड़ित व्यक्ति को अस्पताल भेजने की व्यवस्था करें।

क्या न करें ?

- पीड़ित व्यक्ति को उत्तेजित न करें और नहीं चलने फिरने दें।
- सर्पदंश के स्थान पर किसी प्रकार का घाव न करें।
- साँप को पकड़ने का का प्रयास न करें।
- पीड़ित व्यक्ति को कोई मादक पदार्थ न दें।